Journal of Integrative Science and Societal Impact
July-September 2026 2(2)
https://jissi.org

Original Article

THE ROLE OF TEACHERS IN IMPLEMENTING INCLUSIVE EDUCATION: AN ANALYTICAL STUDY OF MAINSTREAM CLASSROOMS

समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका: मुख्यधारा कक्षाओं का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Chitra Verma [1*], **Dr. Bhupendra Singh** [2]
[1] Research Scholar, Vikrant University, Gwalior, India
[2] Associate Professor, School of Humanities and Culture, Vikrant University, Gwalior, India

ABSTRACT

English: Inclusive education is a crucial and essential approach in today's education system, aiming to provide equal, equitable, and quality education to all learners, regardless of their social, economic, or physical background. The present study aims to analyze the role of teachers in implementing inclusive education in mainstream classrooms and identify key factors influencing its effective implementation. This study used a mixed research design, with 100 teachers selected through convenience sampling. Structured questionnaires and semi-structured interviews were used to collect data, which sought information on teachers' attitudes, training, resource availability, and institutional support. The results revealed that teachers' attitudes, training, and assistance/support have a positive and statistically significant relationship with the successful implementation of inclusive education. Correlation analysis revealed a significant relationship between teachers' attitudes and implementation success ($r = 0.213$, $p < 0.05$) and between teacher training and implementation success ($r = 0.222$, $p < 0.05$). Regression analysis also revealed that assistance and support ($\beta = 0.453$, $p = 0.033$) is a significant predictor of the implementation of inclusive education. However, the effect of resource availability was not statistically significant, indicating that physical resources alone are not sufficient. Qualitative analysis revealed that teachers have positive attitudes toward inclusive education, but face challenges such as time management, classroom management, and understanding of special needs. Conclusively, this study demonstrates that the success of inclusive education depends on teachers' positive attitudes, effective training, and strong institutional support. This study provides important guidance for policymakers and educational administrators that effective implementation of inclusive education can only be achieved through teacher-centered strategies.

Hindi: समावेशी शिक्षा आज की शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य दृष्टिकोण है, जिसका उद्देश्य सभी शिक्षार्थियों को समान, न्यायसंगत एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, चाहे उनकी सामाजिक, आर्थिक या शारीरिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मुख्यधारा कक्षाओं में समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका का विश्लेषण करना तथा इसके प्रभावी कार्यान्वयन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना है। इस अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान डिज़ाइन का उपयोग किया गया, जिसमें 100 शिक्षकों को सुविधाजनक नमूना तकनीक द्वारा चयनित किया गया। डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली तथा अर्ध-संरचित साक्षात्कार का उपयोग किया गया, जिसमें शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता एवं संस्थागत सहयोग से संबंधित

*Corresponding Author:
Email address: Chitra Verma (Chitra.Verma@outlook.com)

Received: 13 June 2026; **Accepted:** 22 July 2026; **Published** 08 August 2026
DOI: 10.29121/JISSI.v2.i2.2026.89
Page Number: 29-43
Journal Title: Journal of Integrative Science and Societal Impact
Journal Abbreviation: J. Integr. Sci. Soc. Impact
Online ISSN: 3108-2165, **Print ISSN:** 3108-1959
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

जानकारी प्राप्त की गई। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों का दृष्टिकोण, प्रशिक्षण एवं सहायता/समर्थन का समावेशी शिक्षा के सफल क्रियान्वयन के साथ सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध है। सहसंबंध विश्लेषण में शिक्षकों के दृष्टिकोण और कार्यान्वयन की सफलता ($r = 0.213$, $p < 0.05$) तथा शिक्षक प्रशिक्षण और कार्यान्वयन की सफलता ($r = 0.222$, $p < 0.05$) के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया गया। प्रतिगमन विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि सहायता एवं समर्थन ($\beta = 0.453$, $p = 0.033$) समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन का एक महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक है। हालांकि, संसाधनों की उपलब्धता का प्रभाव सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया, जो यह संकेत देता है कि केवल भौतिक संसाधन पर्याप्त नहीं हैं। गुणात्मक विश्लेषण में यह सामने आया कि शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, परंतु उन्हें समय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन एवं विशेष आवश्यकताओं की समझ जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अतः निष्कर्षतः यह अध्ययन दर्शाता है कि समावेशी शिक्षा की सफलता शिक्षकों के सकारात्मक दृष्टिकोण, प्रभावी प्रशिक्षण तथा मजबूत संस्थागत सहयोग पर निर्भर करती है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं एवं शैक्षिक प्रशासकों के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है कि शिक्षक-केन्द्रित रणनीतियों के माध्यम से ही समावेशी शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है।

Keywords: Inclusive Education, Teacher role, Mainstream Classroom, Teacher Training, Teaching Strategies, Availability of Resources, Institutional Support, Differentiated Teaching, Inclusion, Educational Equity, समावेशी शिक्षा, शिक्षक भूमिका, मुख्यधारा कक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षण रणनीतियाँ, संसाधनों की उपलब्धता, संस्थागत सहयोग, विभेदित शिक्षण, समावेशन, शैक्षिक समानता

प्रस्तावना

समकालीन शिक्षा व्यवस्था में समावेशी शिक्षा महत्वपूर्ण और अनिवार्य अवधारणा के रूप में उभरी है, जिसका मूल उद्देश्य प्रत्येक बच्चे को—चाहे वह किसी भी सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक या मानसिक पृष्ठभूमि से संबंधित हो—समान, न्यायसंगत और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। यह दृष्टिकोण केवल शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह इस बात पर भी बल देता है कि प्रत्येक शिक्षार्थी को उसकी आवश्यकताओं, क्षमताओं और रुचियों के अनुसार सीखने का अवसर प्रदान किया जाए। इसी संदर्भ में मुख्यधारा कक्षाओं में समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन एक जटिल, बहुआयामी और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया बन जाता है, जिसमें शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। Tripathi (2025), Ninad et al. (2023) वैश्वीकरण, मानवाधिकारों के प्रति बढ़ती जागरूकता और शिक्षा के लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया ने समावेशी शिक्षा को एक वैश्विक एजेंडा बना दिया है। शिक्षा को अब केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और समावेशन का उपकरण माना जा रहा है। इसी दिशा में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय घोषणाओं और नीतियों—जैसे सलमाने स्टेटमेंट (1994) United Nations. (1994)—ने यह स्पष्ट किया है कि सभी बच्चों को एक ही शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत पढ़ाया जाना चाहिए, चाहे वे विशेष आवश्यकता वाले क्यों न हों। भारत में भी शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई अधिनियम, 2009) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) ने समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ठोस दिशा-निर्देश प्रदान किए हैं। Mahananda (2025)

समावेशी शिक्षा का मूल दर्शन यह है कि "हर बच्चा महत्वपूर्ण है"और उसे शिक्षा प्रणाली में समान अवसर मिलना चाहिए। यह दृष्टिकोण पारंपरिक विशेष शिक्षा मॉडल से भिन्न है, जिसमें विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को अलग विद्यालयों में शिक्षित किया जाता था। समावेशी शिक्षा इस विभाजन को समाप्त कर सभी बच्चों को एक ही कक्षा में सीखने का अवसर प्रदान करती है, जिससे सामाजिक समरसता, सहानुभूति और सहयोग की भावना विकसित होती है। हालांकि, इस आदर्श को व्यवहार में लागू करना कई स्तरों पर चुनौतीपूर्ण है। मुख्यधारा कक्षाओं में समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका केंद्रीय होती है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, सहायक, समन्वयक और प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। उन्हें विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों—जैसे कि शारीरिक विकलांगता, सीखने की कठिनाइयों, ऑटिज़्म, अटेंशन-डेफिसिट/हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (एडीएचडी), Holz and Lessing (2002) या सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि वाले छात्रों—की आवश्यकताओं को समझना और उनके अनुरूप शिक्षण रणनीतियों का विकास करना होता है। इसके लिए शिक्षकों को न केवल विषय-विशेष ज्ञान, बल्कि विशेष शिक्षण कौशल, संवेदनशीलता और लचीलेपन की भी आवश्यकता होती है। Shevchenko et al. (2020), Antia (1999)

हालांकि, वास्तविकता में शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इनमें प्रशिक्षण की कमी, संसाधनों का अभाव, अत्यधिक छात्र-शिक्षक अनुपात, समय की सीमाएं, और संस्थागत समर्थन की कमी प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त, कई शिक्षक समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों और व्यवहारिक पहलुओं से पूरी तरह परिचित नहीं होते, जिससे वे कक्षा में विविधता को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में कठिनाई महसूस करते हैं। इस प्रकार, शिक्षक की तैयारी और उनकी मानसिकता समावेशी शिक्षा की सफलता में निर्णायक भूमिका निभाती है।

समावेशी कक्षा में शिक्षण के लिए डिफ्रेंटिएटेड इंस्ट्रक्शन, यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (यूडीएल), Priyadarshini and Sahaya Mary (2024) और सहयोगात्मक शिक्षण जैसी आधुनिक शिक्षण रणनीतियों का उपयोग आवश्यक हो जाता है। ये दृष्टिकोण शिक्षकों को विभिन्न क्षमताओं और सीखने की शैलियों वाले छात्रों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए, डिफ्रेंटिएटेड इंस्ट्रक्शन के माध्यम से शिक्षक एक ही विषय को विभिन्न स्तरों और तरीकों से प्रस्तुत कर सकते हैं, जिससे प्रत्येक छात्र अपनी गति और क्षमता के अनुसार सीख सके। इसी प्रकार, यूडीएल का उद्देश्य पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों को इस प्रकार डिजाइन करना है कि वे सभी छात्रों के लिए सुलभ और उपयोगी हों। Gaal et al. (2025)

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे अभिभावकों, विशेष शिक्षकों, परामर्शदाताओं और प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित करके एक समग्र समर्थन प्रणाली विकसित करते हैं। यह बहु-हितधारक दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक छात्रों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने, भेदभाव को समाप्त करने और सहयोगात्मक सीखने को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। Woodcock and Anderson (2025), Fairbrother et al. (2025)

समावेशी शिक्षा की अवधारणा और महत्व

समावेशी शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा प्रणाली से है जिसमें सभी विद्यार्थी, चाहे वे किसी भी प्रकार की शारीरिक या मानसिक अक्षमता से ग्रस्त हों, एक ही कक्षा में साथ-साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह दृष्टिकोण पारंपरिक पृथक्करण की अवधारणा के विपरीत है और समानता तथा सहभागिता को बढ़ावा देता है।

समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल शिक्षा तक पहुँच प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप सीखने का अवसर मिले। इसके अंतर्गत शिक्षक को शिक्षण विधियों, पाठ्य सामग्री और मूल्यांकन प्रणाली में लचीलापन अपनाना होता है।

शिक्षक प्रशिक्षण और संसाधनों की आवश्यकता

समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए शिक्षक प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है। प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों की पहचान, मूल्यांकन तथा शिक्षण रणनीतियों के उपयोग के लिए सक्षम बनाते हैं।

इसके अतिरिक्त, विद्यालयों में सहायक संसाधनों जैसे—विशेष शिक्षकों, सहायक उपकरणों, अनुकूलित पाठ्य सामग्री, तथा तकनीकी सहायता की उपलब्धता भी महत्वपूर्ण है। यदि ये संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों, तो शिक्षक अधिक प्रभावी ढंग से समावेशी शिक्षा को लागू कर सकते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता और उद्देश्य

यद्यपि समावेशी शिक्षा पर अनेक अध्ययन किए जा चुके हैं, फिर भी मुख्यधारा कक्षाओं में इसके व्यावहारिक कार्यान्वयन से संबंधित चुनौतियों और शिक्षकों की वास्तविक भूमिका पर सीमित शोध उपलब्ध है। विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में, यह आवश्यक है कि शिक्षकों के अनुभवों, दृष्टिकोणों तथा रणनीतियों का गहन विश्लेषण किया जाए।

इस अध्ययन का उद्देश्य मुख्यधारा कक्षाओं में समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका का विश्लेषण करना, उनके द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों की पहचान करना, तथा प्रभावी रणनीतियों और नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना है।

पेपर की संरचना

इस शोध पत्र का शेष भाग निम्न प्रकार से संगठित किया गया है। अनुभाग 2 में संबंधित साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत की गई है, जिसमें समावेशी शिक्षा, शिक्षक भूमिका एवं प्रशिक्षण से संबंधित प्रमुख अध्ययनों का विश्लेषण किया गया है। अनुभाग 3 में अनुसंधान कार्यप्रणाली का विवरण दिया गया है। अनुभाग 4 में प्राप्त परिणामों एवं उनकी व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जबकि अनुभाग 5 में निष्कर्ष एवं भविष्य के शोध के लिए सुझाव दिए गए हैं।

साहित्य की समीक्षा

समावेशी शिक्षा पर पिछले कुछ दशकों में व्यापक शोध किया गया है, जिसमें शिक्षकों की भूमिका, प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता तथा कक्षा-स्तरीय चुनौतियों पर विशेष ध्यान दिया गया है। विभिन्न अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि समावेशी शिक्षा की सफलता काफी हद तक शिक्षकों की तैयारी, दृष्टिकोण तथा संस्थागत समर्थन पर निर्भर करती है। नीचे प्रमुख अध्ययनों का सारांश तालिका 1 के रूप में प्रस्तुत किया गया है:

White and Fletcher (2026) का यह अध्ययन दक्षिणी इंग्लैंड के एक प्राथमिक विद्यालय में समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की धारणाओं और अनुभवों का विश्लेषण करता है। प्रज्ञानात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत सात शिक्षकों के अर्ध-संरचित साक्षात्कार लिए गए। विषयगत विश्लेषण से चार प्रमुख आयाम सामने आए—व्यक्तिगत शिक्षण दृष्टिकोण, प्रणालीगत सीमाओं की पहचान, विद्यालय संस्कृति की भूमिका, और अनुभव आधारित ज्ञान का निर्माण। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि समावेशी शिक्षा का प्रभावी क्रियान्वयन केवल व्यक्तिगत प्रयासों पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह संस्थागत संरचना, संसाधनों, विद्यालय वातावरण और व्यावसायिक अनुभव के सम्मिलित प्रभाव से संचालित होता है। शोध सामाजिक-पारिस्थितिक और समालोचनात्मक दृष्टिकोणों के माध्यम से शिक्षकों के अनुभवों की गहन समझ प्रस्तुत करता है। इसके निष्कर्ष कक्षा-शिक्षण, नीति निर्माण और शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार हेतु उपयोगी हैं। हालांकि, सीमित नमूना और एकल विद्यालय पर आधारित होने के कारण आगे व्यापक शोध की आवश्यकता बताई गई है। White and Fletcher (2026)

Kumar and Sudam (2025) समावेशी शिक्षा विद्यालयी संस्कृति, नीतियों तथा व्यवहारों का नाम है, जिसमें सभी प्रकार के विद्यार्थियों सामान्य, दिव्यांग तथा सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित के लिए समानता व निष्पक्षता के सिद्धांतो को अपनाते हुए भेदभाव मुक्त वातावरण बनाना है। पिछले कुछ वर्षों में समावेशी शिक्षा के द्वारा विभिन्न आवश्यकताओं वाले छात्रों की समान पहुँच एवं भागीदारी को सुनिश्चित करने व बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत प्रयास किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में दिव्यांग या विशेष आवश्यकताओं वाले सभी बच्चों के लिए समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। समावेशी शिक्षा की सफलता, प्रधानाचार्य व शिक्षकों के दृष्टिकोण, धारणाओं एवं समावेशी विद्यालय पर निर्भर करती है जो इसके कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रधानाचार्य एवं शिक्षक के सकारात्मक दृष्टिकोण एवं विश्वास एक समावेशी कक्षा वातावरण बना सकते हैं, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण विकलांग छात्रों के प्रभावी एकीकरण में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य इस अध्ययन में समावेशी विद्यालयों के सृजन एवं समावेशी क्रियाकलापों के क्रियान्वयन में प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों की भूमिका का विश्लेषण करना है। Kumar and Sudam (2025)

Sepadi (2025) का यह अध्ययन दक्षिण अफ्रीका के लिम्पोपो प्रांत के एक ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय में समावेशी शिक्षा की समझ और उसके क्रियान्वयन का विश्लेषण करता है। गुणात्मक पद्धति के अंतर्गत कक्षा अवलोकन और तीन शिक्षकों के अर्ध-संरचित साक्षात्कार किए गए। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि शिक्षकों के वैचारिक समर्थन और वास्तविक कक्षा-व्यवहार में अंतर है, जहाँ शिक्षण अभी भी पारंपरिक और अविभेदित है। समावेशन को प्रायः केवल दिव्यांगता तक सीमित समझा गया। प्रमुख चुनौतियों में भीड़भाड़, कठोर पाठ्यक्रम और अपर्याप्त प्रशिक्षण शामिल हैं। इसके बावजूद शिक्षक समुचित प्रशिक्षण और संस्थागत सहयोग मिलने

पर समावेशी पद्धतियाँ अपनाने के इच्छुक हैं। अध्ययन नीति और व्यवहार के बीच अंतर को पाटने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम लचीलापन और संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देता है। Sepadi (2025)

Long et al. (2025) का यह मेटा-विश्लेषण चीनी शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और आत्म-प्रभावकारिता का समेकित अध्ययन प्रस्तुत करता है। 2010 से 2024 के बीच प्रकाशित 16 अध्ययनों (कुल 10,361 शिक्षकों) को शामिल करते हुए रैंडम-इफेक्ट मॉडल का उपयोग किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि चीनी शिक्षकों में समावेशन के प्रति मध्यम स्तर का सकारात्मक दृष्टिकोण ($g = 0.42$) और उच्च आत्म-प्रभावकारिता ($g = 1.31$) पाई गई। साथ ही, दृष्टिकोण और आत्म-प्रभावकारिता के बीच मध्यम सहसंबंध ($\bar{r} = 0.49$) पाया गया, जो यह दर्शाता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक स्वयं को अधिक सक्षम भी मानते हैं। मेटा-रिग्रेशन से यह भी स्पष्ट हुआ कि इस संबंध में समय के साथ हल्की सकारात्मक वृद्धि हुई है। लैंगिक अंतर में महिला शिक्षकों की आत्म-प्रभावकारिता थोड़ी अधिक पाई गई। हालांकि, शिक्षक का प्रकार, विद्यार्थियों की दिव्यांगता का प्रकार और विद्यालय-स्तरीय कारक महत्वपूर्ण प्रभावकारी नहीं पाए गए। यह अध्ययन बताता है कि शिक्षकों के दृष्टिकोण और आत्म-प्रभावकारिता को सुदृढ़ कर समावेशी प्रथाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है। Long et al. (2025)

Saez-Gonzalez et al. (2025) का यह अध्ययन शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति धारणाओं और अनुभवों का विश्लेषण करता है। गुणात्मक, क्रॉस-सेक्शनल डिजाइन के अंतर्गत स्पेन के 75 शिक्षकों से डिजिटल सर्वेक्षण द्वारा डेटा एकत्र किया गया और विषयगत विश्लेषण किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि शिक्षक समावेशी प्रथाओं को अपनाने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और प्रशिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक हैं। हालांकि, उच्च छात्र–शिक्षक अनुपात, संसाधनों की कमी, अत्यधिक कार्यभार और सहायक कर्मियों के अभाव जैसी संरचनात्मक बाधाएँ इनके प्रभावी क्रियान्वयन में प्रमुख अवरोध हैं। इन चुनौतियों के कारण शिक्षकों में निराशा भी देखी गई। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि ये समस्याएँ वैश्विक स्तर पर समान हैं। निष्कर्षतः, समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए निरंतर, विषय-विशिष्ट प्रशिक्षण तथा पर्याप्त मानव और भौतिक संसाधनों के साथ मजबूत संस्थागत समर्थन आवश्यक है। Saez-Gonzalez et al. (2025)

Aftab et al. (2024) इस अध्ययन का उद्देश्य मुख्यधारा कक्षा परिवेश में दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रभावी समावेशन को सुगम बनाने वाली रणनीतियों का आकलन करना था। इसमें वर्णनात्मक मात्रात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया, जिसमें डेटा संग्रह के लिए पूर्व-निर्धारित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जो प्रासंगिक साहित्य के व्यापक अध्ययन पर आधारित थी, और सांख्यिकीय विश्लेषण SPSS का उपयोग करके किया गया। इस अध्ययन में वर्णनात्मक सांख्यिकी के साथ-साथ t-परीक्षण और एनोवा जैसे अनुमानी तरीकों का उपयोग उत्तरों के विश्लेषण के लिए किया गया। निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि शिक्षकों का समावेशी शिक्षा रणनीतियों के प्रति मुख्यतः सकारात्मक दृष्टिकोण है, विशेषकर सह-शिक्षण, विभेदित शिक्षण और यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग के संदर्भ में। जबकि लिंग, पदनाम और क्षेत्र के आधार पर भिन्नताएँ देखी गईं, यह स्पष्ट था कि शिक्षकों के बीच सहयोगात्मक योजना अत्यंत महत्वपूर्ण थी। ये निष्कर्ष समावेशी प्रथाओं को बढ़ावा देने में निरंतर व्यावसायिक विकास, सहयोगात्मक संबंधों और संसाधनों के पर्याप्त आवंटन के महत्व को रेखांकित करते हैं। भविष्य के शोध का उद्देश्य सभी विद्यार्थियों के लिए समानतापूर्ण अधिगम वातावरण को सुदृढ़ करना होना चाहिए, जिसके लिए समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन को प्रभावित करने वाले व्यावसायिक पृष्ठभूमि और संदर्भात्मक कारकों का गहन अध्ययन किया जाना आवश्यक है। Aftab et al. (2024)

Kenny et al. (2023) का यह अध्ययन समावेशी शिक्षा और विद्यालय-आधारित उत्पीड़न की रोकथाम के बीच संबंध का विश्लेषण करता है। लेख में बताया गया है कि दोनों ही क्षेत्र जटिल और विवादित हैं, जिनकी स्पष्ट परिभाषा और प्रभावी क्रियान्वयन पर सहमति का अभाव है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन द्वारा प्रस्तावित "समग्र शिक्षा दृष्टिकोण" को केंद्र में रखते हुए, यह अध्ययन उत्पीड़न को सामाजिक समर्थन की कमी से जोड़ता है और इसके समाधान हेतु पारिस्थितिक एवं संबंधपरक दृष्टिकोण पर बल देता है। इसमें विद्यालय, परिवार, समुदाय, नीतिगत ढाँचा और सरकारी संसाधनों के बीच समन्वित सहयोग को आवश्यक माना गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि यह समग्र दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा नीति में भी उपयोगी हो सकता है, जिससे सभी शिक्षार्थियों के लिए समान अवसर और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा दिया जा सके। Kenny et al. (2023)

Sirem and Chatal (2023) समावेशी शिक्षा से अपेक्षित लाभों को प्राप्त करने और आवश्यक परिवर्तन एवं व्यवस्थाएँ करने के लक्ष्य तभी हासिल किए जा सकते हैं जब समावेशी शिक्षा की वर्तमान स्थिति का स्पष्ट रूप से निर्धारण किया जाए। इस अध्ययन का उद्देश्य तुर्की में कक्षा शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के संबंध में उनकी धारणाओं, ज्ञान और दृष्टिकोण के संदर्भ में उनकी दक्षताओं का परीक्षण करना था। अध्ययन में कुल 128 कक्षा शिक्षकों ने भाग लिया, जिनमें तृतीय कक्षा के (20) और चतुर्थ कक्षा के (108) शिक्षक शामिल थे। इस अध्ययन में, जो प्रज्ञानात्मक विधि के अनुसार किया गया, डेटा संग्रह के लिए 'कक्षा शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता मापनी' का उपयोग किया गया। डेटा का वर्णनात्मक विश्लेषण किया गया। कक्षा शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के प्रति सामान्यतः सकारात्मक जागरूकता के अलावा, यह आवश्यक प्रतीत होता है कि समावेशी शिक्षा को पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों के सामाजिक-भावनात्मक कौशलों को समर्थन दिया जाए। Sirem and Chatal (2023)

Dignath et al. (2022) का यह मेटा-विश्लेषण समावेशी शिक्षा के संदर्भ में शिक्षकों की विश्वास प्रणालियों—संज्ञानात्मक (दृष्टिकोण), भावनात्मक (भावनाएँ) और आत्म-प्रभावकारिता—का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करता है। 2000 से 2020 के बीच प्रकाशित 102 अध्ययनों (40 देशों के 40,898 शिक्षकों) के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षकों के ये तीनों विश्वास आयाम औसतन मध्यम स्तर पर हैं, जो सुधार की संभावनाओं को दर्शाते हैं। अध्ययन में पाया गया कि प्रशिक्षण-पूर्व शिक्षकों में आत्म-प्रभावकारिता ($M = 3.69$) सेवा में कार्यरत शिक्षकों ($M = 3.13$) की तुलना में अधिक है। साथ ही, विशेष शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षक सामान्य शिक्षा के शिक्षकों की अपेक्षा समावेशन के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं ($d = 0.41$)। इसके अतिरिक्त, विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और हस्तक्षेपों का शिक्षकों के विश्वासों पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया, जिससे संज्ञानात्मक और भावनात्मक मूल्यांकन ($d = 0.63$) तथा आत्म-प्रभावकारिता ($d = 0.93$) में उल्लेखनीय सुधार हुआ। विशेष रूप से, व्यावहारिक अनुभव आधारित प्रशिक्षण शिक्षकों को अपने दृष्टिकोणों पर पुनर्विचार करने और समावेशी प्रथाओं को अपनाने में अधिक सक्षम बनाता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षकों की विश्वास प्रणालियाँ नीति और व्यवहार के बीच की खाई को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निष्कर्षतः, प्रभावी शिक्षक-प्रशिक्षण और अनुभवात्मक अधिगम समावेशी शिक्षा के सफल क्रियान्वयन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। Dignath et al. (2022)

Knight et al. (2022) वेल्स, जो यूनाइटेड किंगडम के चार राष्ट्रों में से एक है, वर्तमान में शिक्षा प्रणाली के स्तर पर बड़े सुधारों से गुजर रहा है। पाठ्यक्रम से लेकर एक नई अतिरिक्त अधिगम आवश्यकताएँ (ALN) प्रणाली तक, समावेशी शिक्षा पर पुनः ध्यान केंद्रित किया गया है। शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि समावेशी अधिगम वातावरण बनाने में शिक्षकों के समावेशन के प्रति दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण महत्व है। यह शोध अध्ययन वेल्स के शिक्षकों के एक सर्वेक्षण ($n = 253$) के डेटा

पर आधारित है, जिसमें समावेशी शिक्षा के प्रति उनकी धारणाओं का अन्वेषण किया गया। मुक्त-पाठ प्रतिक्रियाओं के विषयगत विश्लेषण से यह सामने आया कि यद्यपि शिक्षक समावेशन के 'आदर्श' को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सक्षम थे, ये सकारात्मक आदर्श अक्सर ALN वाले शिक्षार्थियों के प्रति अंतर्निहित भिन्नता की भावना तथा व्यवहार, प्रशिक्षण, वित्त और संसाधनों की स्पष्ट सीमाओं द्वारा सीमित हो जाते थे। यह लेख वेल्स में समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की धारणाओं के निहितार्थों का समालोचनात्मक मूल्यांकन करता है और सुझाव देता है कि यदि शिक्षकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन नहीं होता है, तो समावेशी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना प्रभावित हो सकती है। Knight et al. (2022)

तालिका 1

तालिका 1 समावेशी शिक्षा पर चयनित अध्ययनों की साहित्य समीक्षा सारणी

लेखक और वर्ष	अध्ययन का संदर्भ	कार्यप्रणाली	मुख्य परिणाम	सीमाएँ / अनुसंधान अंतराल
White and Fletcher (2026)	दक्षिणी इंग्लैंड का एक प्राथमिक विद्यालय	गुणात्मक, प्रज्ञानात्मक दृष्टिकोण; 7 शिक्षकों के अर्ध-संरचित साक्षात्कार; विषयगत विश्लेषण	समावेशन व्यक्तिगत दृष्टिकोण, प्रणालीगत सीमाओं, विद्यालय संस्कृति और अनुभव पर निर्भर; व्यावसायिक विकास का महत्व	छोटा नमूना आकार; एक ही विद्यालय पर केंद्रित
Kumar and Sudam (2025)	समावेशी विद्यालयों का सामान्य संदर्भ	वैचारिक/विश्लेषणात्मक अध्ययन	समावेशी शिक्षा में शिक्षक और प्रधानाचार्य की भूमिका महत्वपूर्ण; सकारात्मक दृष्टिकोण समावेशन को बढ़ावा देता है	अनुभवजन्य डेटा का अभाव
Sepadi (2025)	दक्षिण अफ्रीका का ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय	गुणात्मक; कक्षा अवलोकन एवं 3 शिक्षकों के साक्षात्कार	नीति और व्यवहार में अंतर; प्रशिक्षण, संसाधन और पाठ्यक्रम की बाधाएँ	सीमित नमूना; ग्रामीण संदर्भ तक सीमित
Long et al. (2025)	चीन में समावेशी शिक्षा	मेटा-विश्लेषण; 16 अध्ययन, 10,361 शिक्षक	मध्यम सकारात्मक दृष्टिकोण और उच्च आत्म-प्रभावकारिता; दोनों में सहसंबंध	सांस्कृतिक/संदर्भीय विविधता का सीमित विश्लेषण
Saez-Gonzalez et al. (2025)	स्पेन में शारीरिक शिक्षा शिक्षक	गुणात्मक; डिजिटल सर्वेक्षण; विषयगत विश्लेषण	संसाधनों की कमी, उच्च कार्यभार; प्रशिक्षण की आवश्यकता	केवल शारीरिक शिक्षा तक सीमित; स्व-रिपोर्ट डेटा
Aftab et al. (2024)	मुख्यधारा कक्षा में दिव्यांग छात्रों का समावेशन	मात्रात्मक; प्रश्नावली; SPSS (t-test, ANOVA)	सह-शिक्षण, UDL और विभेदित शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण	संदर्भ-विशिष्ट; दीर्घकालिक प्रभावों का अभाव
Kenny et al. (2023)	समावेशी शिक्षा एवं विद्यालय-आधारित उत्पीड़न	वैचारिक/नीतिगत विश्लेषण	समग्र शिक्षा दृष्टिकोण; बहु-हितधारक सहयोग का महत्व	व्यावहारिक परीक्षण (empirical validation) का अभाव
Sirem and Chatal (2023)	तुर्की के कक्षा शिक्षक	प्रज्ञानात्मक; 128 शिक्षकों पर सर्वे; वर्णनात्मक विश्लेषण	सकारात्मक जागरूकता; सामाजिक-भावनात्मक कौशल समर्थन की आवश्यकता	केवल वर्णनात्मक विश्लेषण; कारणात्मक निष्कर्ष सीमित
Dignath et al. (2022)	वैश्विक स्तर (40 देश)	मेटा-विश्लेषण; 102 अध्ययन, 40,898 शिक्षक	दृष्टिकोण, भावनाएँ और आत्म-प्रभावकारिता मध्यम स्तर पर; प्रशिक्षण से सुधार	विविध संदर्भों के कारण सामान्यीकरण की चुनौती
Knight et al. (2022)	वेल्स (UK) शिक्षा प्रणाली	सर्वेक्षण; 253 शिक्षक; विषयगत विश्लेषण	सकारात्मक दृष्टिकोण के बावजूद संसाधन, प्रशिक्षण और व्यवहार बाधाएँ	नीतिगत परिवर्तन के दीर्घकालिक प्रभावों का अभाव

अनुसंधान कार्यप्रणाली

इस अनुभाग में अनुसंधान डिज़ाइन, नमूना चयन, डेटा संग्रहण, मापन उपकरण तथा सांख्यिकीय विश्लेषण तकनीकों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन मुख्यधारा विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन पर शिक्षकों की भूमिका, दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता तथा कार्यान्वयन की सफलता के बीच संबंधों का विश्लेषण करने हेतु किया गया है।

अनुसंधान डिज़ाइन

वर्तमान अध्ययन में मुख्यधारा विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन का विश्लेषण करने हेतु Tripathi (2025) अपनाया गया है। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के डेटा का उपयोग किया गया है, जिससे अध्ययन को व्यापक एवं गहन आधार प्राप्त हो सके। मात्रात्मक विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न चर के बीच संबंधों का सांख्यिकीय परीक्षण किया गया, जबकि गुणात्मक विश्लेषण के माध्यम से शिक्षकों के अनुभवों, चुनौतियों एवं व्यवहारिक रणनीतियों को समझने का प्रयास किया गया।

नमूना एवं नमूना चयन तकनीक

इस अध्ययन में कुल 100 शिक्षकों को नमूने के रूप में शामिल किया गया, जो विभिन्न मुख्यधारा विद्यालयों से संबंधित हैं। प्रतिभागियों का चयन सुविधाजनक नमूना तकनीक के आधार पर किया गया, जिससे डेटा संग्रहण में सरलता एवं प्रतिभागियों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त, गुणात्मक अध्ययन के लिए कुछ चयनित शिक्षकों का चयन किया गया, जिनके पास समावेशी शिक्षा का प्रत्यक्ष अनुभव था।

डेटा संग्रहण प्रक्रिया

डेटा संग्रहण के लिए संरचित प्रश्नावली एवं अर्ध-संरचित साक्षात्कार दोनों विधियों का उपयोग किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से शिक्षकों से उनके दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता एवं समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन की सफलता से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। वहीं, साक्षात्कार के माध्यम से शिक्षकों के अनुभवों, चुनौतियों एवं शिक्षण रणनीतियों के बारे में विस्तृत एवं गहन जानकारी प्राप्त की गई।

मापन उपकरण

मात्रात्मक डेटा के लिए 5-बिंदु लिकर्ट स्केल आधारित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें उत्तर 1 (पूर्णतः असहमत) से 5 (पूर्णतः सहमत) तक दर्ज किए गए। इस प्रश्नावली में शिक्षक दृष्टिकोण, प्रशिक्षण स्तर, संसाधनों की उपलब्धता एवं क्रियान्वयन की सफलता से संबंधित आयाम शामिल किए गए। गुणात्मक डेटा के लिए साक्षात्कार गाइड तैयार किया गया, जिससे व्यवस्थित रूप से जानकारी प्राप्त की जा सके।

अध्ययन के चर

इस अध्ययन में समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन की सफलता को निर्भर चर के रूप में लिया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों का दृष्टिकोण, शिक्षक प्रशिक्षण एवं संसाधनों की उपलब्धता को स्वतंत्र चर के रूप में शामिल किया गया है। इन चर के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया कि कौन से कारक समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन को प्रभावित करते हैं।

डेटा तैयारी

संग्रहित डेटा को कोडिंग के पश्चात स्टैटिस्टिकल पैकेज फॉर सोशल साइंसेज (SPSS) में प्रविष्ट किया गया। डेटा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए लुप्त मान, त्रुटियों एवं आउटलेयर्स की जाँच की गई। सभी 100 प्रकरण विश्लेषण के लिए उपयुक्त पाए गए, जिससे अध्ययन की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित हुई।

सांख्यिकीय एवं गुणात्मक विश्लेषण तकनीकें

इस अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया:

वर्णनात्मक सांख्यिकी

अध्ययन में वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग करते हुए डेटा का प्रारंभिक विश्लेषण किया गया। प्रतिभागियों के वितरण को समझने के लिए आवृत्ति एवं प्रतिशत का प्रयोग किया गया, जबकि प्रमुख चरों के औसत एवं विविधता को जानने हेतु माध्य और मानक विचलन का उपयोग किया गया।

सहसंबंध विश्लेषण

स्पीयरमैन रैंक कोरिलेशन का उपयोग कर शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रशिक्षण एवं कार्यान्वयन की सफलता के बीच संबंधों का परीक्षण किया गया।

प्रतिगमन विश्लेषण

अध्ययन में प्रतिगमन विश्लेषण के अंतर्गत ऑर्डिनल लॉजिस्टिक रिग्रेशन का उपयोग किया गया। इस तकनीक के माध्यम से समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन की सफलता पर विभिन्न स्वतंत्र चरों (जैसे शिक्षकों का दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधन आदि) के प्रभाव का आकलन किया गया।

गुणात्मक विश्लेषण

अध्ययन में गुणात्मक विश्लेषण के अंतर्गत साक्षात्कार से प्राप्त डेटा का विषयगत विश्लेषण किया गया। इस प्रक्रिया के माध्यम से प्रमुख थीम जैसे—शिक्षकों का दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता, चुनौतियाँ एवं शिक्षण रणनीतियाँ—की पहचान की गई।

नैतिक विचार

अध्ययन में सभी नैतिक मानकों का पालन किया गया। सभी प्रतिभागियों से पूर्व सहमति प्राप्त की गई तथा उनकी पहचान को गोपनीय रखा गया। एकत्रित डेटा का उपयोग केवल शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए किया गया और किसी भी व्यक्तिगत जानकारी का खुलासा नहीं किया गया।

परिणाम एवं चर्चा

इस अध्ययन में समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन की सफलता पर विभिन्न कारकों के प्रभाव का विश्लेषण करने हेतु स्पेअरमांस रैंक कॉरिलेशन, ऑर्डिनल लॉजिस्टिक रिग्रेशन तथा विषयगत विश्लेषण का उपयोग किया गया। प्राप्त परिणाम निम्नलिखित हैं:

प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ

नमूने की संरचना को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने हेतु प्रमुख जनसांख्यिकीय चर के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी की गणना की गई। इस भाग में प्रतिभागियों का वितरण उनके लिंग, आयु वर्ग, शैक्षणिक योग्यता, शिक्षण अनुभव, विद्यालय के प्रकार एवं स्थान, कक्षा स्तर, समावेशी शिक्षा प्रशिक्षण तथा विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की उपस्थिति के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। ये विशेषताएँ आगे के विश्लेषण के लिए संदर्भ प्रदान करती हैं। (तालिका 2)

तालिका 2

तालिका 2 जनसांख्यिकीय विशेषताओं का आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

		आवृत्ति	प्रतिशत
लिंग	पुरुष	64	64
	महिला	36	36
आयु वर्ग	20–30 वर्ष	26	26
	31–40 वर्ष	30	30
	41–50 वर्ष	30	30
	51 वर्ष या अधिक	14	14
शैक्षणिक योग्यता	स्नातक	16	16
	स्नातकोत्तर	32	32
	बी.एड. / एम.एड.	23	23
	पीएच.डी.	16	16
	अन्य	13	13
शिक्षण अनुभव	0–5 वर्ष	42	42
	6–10 वर्ष	31	31

	11–15 वर्ष	21	21
	16 वर्ष या अधिक	6	6
विद्यालय का प्रकार	सरकारी	31	31
	निजी	41	41
	अनुदानित	28	28
विद्यालय का स्थान	ग्रामीण	40	40
	शहरी	27	27
	अर्ध-शहरी	33	33
आप किस कक्षा को पढ़ाते हैं?	प्राथमिक	24	24
	उच्च प्राथमिक	31	31
	माध्यमिक	22	22
	उच्च माध्यमिक	23	23
क्या आपने समावेशी शिक्षा से संबंधित कोई प्रशिक्षण प्राप्त किया है?	हाँ	43	43
	नहीं	57	57
यदि हाँ, तो प्रशिक्षण का प्रकार	अल्पकालिक	29	29
	दीर्घकालिक	27	27
	कार्यशाला/सेमिनार	20	20
	अन्य	24	24
आपके विद्यालय में विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की उपस्थिति है?	हाँ	49	49
	नहीं	51	51

चित्र 1

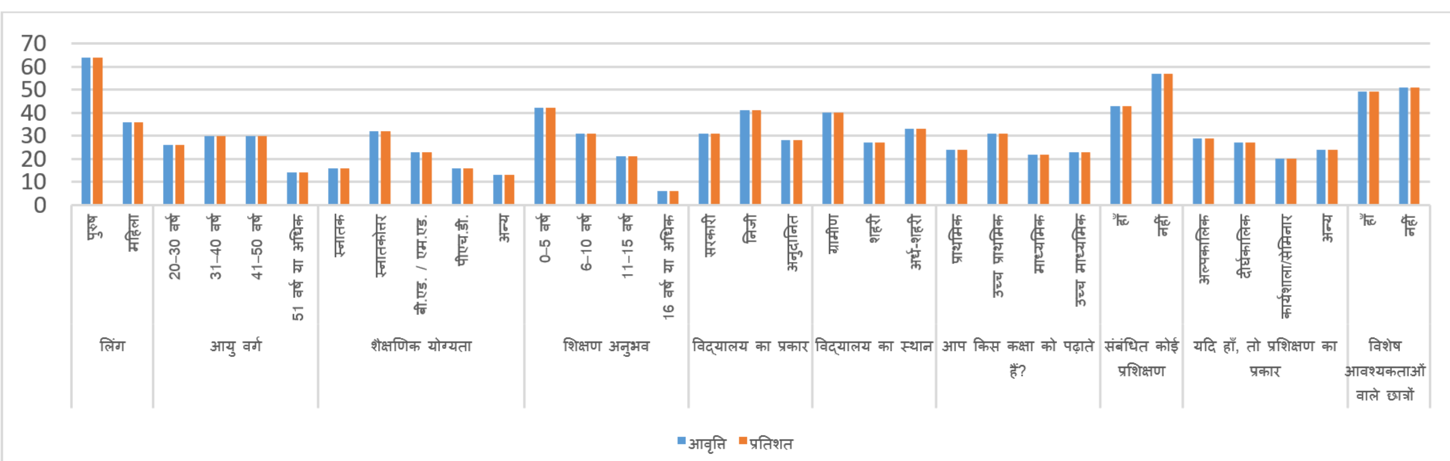

चित्र 1 जनसांख्यिकीय विशेषताओं का आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

चित्र 1 में प्रस्तुत जनसांख्यिकीय आंकड़े प्रतिभागियों की पृष्ठभूमि को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं, जो अध्ययन के निष्कर्षों की विश्वसनीयता और सामान्यीकरण को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लिंग के आधार पर वितरण से ज्ञात होता है कि 64% प्रतिभागी पुरुष तथा 36% महिला हैं। यह दर्शाता है कि अध्ययन में पुरुष प्रतिभागियों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, जिससे लिंग आधारित दृष्टिकोण में हल्का असंतुलन परिलक्षित होता है। आयु वर्ग के अनुसार प्रतिभागियों का वितरण संतुलित दिखाई देता है, जिसमें 31–40 वर्ष और 41–50 वर्ष आयु वर्ग के प्रतिभागी सर्वाधिक (30-30%) हैं, जबकि 20–30 वर्ष (26%) और 51 वर्ष या अधिक (14%) प्रतिभागियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। इससे यह संकेत मिलता है कि अध्ययन में मध्यम आयु वर्ग के शिक्षकों की प्रमुख भागीदारी है, जो अनुभव और व्यावहारिक समझ के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। शैक्षणिक योग्यता के संदर्भ में, सर्वाधिक प्रतिभागी स्नातकोत्तर (32%) हैं, इसके बाद बी.एड./एम.एड. (23%), स्नातक (16%), पीएच.डी. (16%) और अन्य (13%) श्रेणियाँ आती हैं। यह दर्शाता है कि अधिकांश प्रतिभागी उच्च शिक्षित हैं, जो अध्ययन की गुणवत्ता को सुदृढ़ करता है। शिक्षण अनुभव के आधार पर, 0–5 वर्ष के अनुभव वाले प्रतिभागी सर्वाधिक (42%) हैं, जबकि 6–10 वर्ष (31%), 11–15 वर्ष (21%) और 16 वर्ष या अधिक (6%) प्रतिभागियों की संख्या क्रमशः कम होती जाती है। यह दर्शाता है कि अध्ययन में नवोदित शिक्षकों की संख्या अधिक है, जो समकालीन शैक्षिक दृष्टिकोणों से अधिक परिचित हो सकते हैं। विद्यालय के प्रकार के अनुसार, निजी विद्यालयों के शिक्षक सर्वाधिक (41%) हैं, जबकि सरकारी (31%) और अनुदानित (28%) विद्यालयों के शिक्षक भी पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे विभिन्न शैक्षिक व्यवस्थाओं का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होता है। विद्यालय के स्थान के संदर्भ में, ग्रामीण क्षेत्र से 40% प्रतिभागी हैं, जो सर्वाधिक है, जबकि अर्ध-शहरी (33%) और शहरी (27%) प्रतिभागियों का भी अच्छा प्रतिनिधित्व है। यह विविधता अध्ययन को विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में लागू करने योग्य बनाती है। कक्षा के स्तर के अनुसार, उच्च प्राथमिक (31%) के शिक्षक सर्वाधिक हैं, जबकि प्राथमिक (24%), माध्यमिक (22%) और उच्च माध्यमिक (23%) स्तर के शिक्षक भी लगभग समान रूप से शामिल हैं। इससे विभिन्न शैक्षिक स्तरों का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होता है। समावेशी शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण के संदर्भ में, 43% प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है, जबकि 57% ने कोई प्रशिक्षण नहीं लिया है। यह दर्शाता है कि अभी भी समावेशी शिक्षा के प्रशिक्षण की आवश्यकता बनी हुई है। प्रशिक्षण के प्रकार में, अल्पकालिक (29%) और दीर्घकालिक (27%) प्रशिक्षण प्रमुख हैं, जबकि कार्यशाला/सेमिनार (20%) और अन्य (24%) भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह प्रशिक्षण के विविध स्वरूपों को दर्शाता है। अंततः, विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की उपस्थिति के संदर्भ में, 49% प्रतिभागियों ने 'हाँ' और 51% ने 'नहीं' उत्तर दिया है। यह इंगित करता है कि लगभग आधे विद्यालयों में विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र उपस्थित हैं, जिससे समावेशी शिक्षा की प्रासंगिकता और आवश्यकता और अधिक स्पष्ट होती है।

वर्णनात्मक सांख्यिकी का विश्लेषण

अध्ययन में प्रतिभागियों की विभिन्न जनसांख्यिकीय तथा मुख्य चरों से संबंधित प्रवृत्तियों को समझने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया गया। तालिका 3 में प्रत्येक चर के लिए नमूना आकार, माध्य, मानक त्रुटि तथा मानक विचलन प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 3

तालिका 3 प्रतिभागियों की वर्णनात्मक सांख्यिकी (जनसांख्यिकीय एवं अध्ययन चरों का सारांश)

	माध्य		मानक विचलन सांख्यिकी
	सांख्यिकी	मानक त्रुटि	
लिंग	1.36	0.048	0.482
आयु वर्ग	2.32	0.101	1.014
शैक्षणिक योग्यता	2.78	0.127	1.268
शिक्षण अनुभव	1.91	0.093	0.933
विद्यालय का प्रकार	1.97	0.077	0.771
विद्यालय का स्थान	1.93	0.086	0.856
आप किस कक्षा को पढ़ाते हैं?	2.44	0.109	1.095
क्या आपने समावेशी शिक्षा से संबंधित कोई प्रशिक्षण प्राप्त किया है?	1.57	0.05	0.498
यदि हाँ, तो प्रशिक्षण का प्रकार	2.39	0.114	1.145
आपके विद्यालय में विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की उपस्थिति है?	1.51	0.05	0.502
शिक्षकों का दृष्टिकोण	3.67	0.08652	0.86521
शिक्षक प्रशिक्षण	3.68	0.09627	0.96274
संसाधनों की उपलब्धता	3.59	0.09545	0.95447
सहायता और समर्थन	3.6	0.08876	0.88763
कार्यान्वयन की सफलता	3.7	0.09266	0.9266

तालिका 3 में सभी प्रतिभागियों के आँकड़ों का पूर्ण रूप से विश्लेषण किया गया है तथा कोई भी आँकड़ा अनुपस्थित नहीं है। जनसांख्यिकीय चरों के संदर्भ में, लिंग का माध्य (1.36) यह संकेत करता है कि अध्ययन में पुरुष प्रतिभागियों का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक है। आयु वर्ग का माध्य (2.32) यह दर्शाता है कि अधिकांश प्रतिभागी मध्यम आयु वर्ग में आते हैं। शैक्षणिक योग्यता का माध्य (2.78) यह स्पष्ट करता है कि प्रतिभागियों का स्तर उच्च शिक्षा की ओर अधिक झुका हुआ है। शिक्षण अनुभव का माध्य (1.91) यह इंगित करता है कि अधिकतर शिक्षक प्रारंभिक से मध्यम अनुभव वाले हैं। विद्यालय का प्रकार (1.97) तथा विद्यालय का स्थान (1.93) यह दर्शाते हैं कि विभिन्न प्रकार के विद्यालयों और स्थानों का संतुलित प्रतिनिधित्व इस अध्ययन में शामिल है। कक्षा स्तर का माध्य (2.44) यह संकेत देता है कि शिक्षक मुख्यतः उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं से संबंधित हैं। समावेशी शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण का माध्य (1.57) अपेक्षाकृत कम है, जो यह दर्शाता है कि सभी शिक्षकों को इस विषय में पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। वहीं, प्रशिक्षण का प्रकार (2.39) यह दर्शाता है कि प्रशिक्षण के विभिन्न स्वरूप मौजूद हैं। विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की उपस्थिति का माध्य (1.51) यह इंगित करता है कि लगभग आधे विद्यालयों में ऐसे छात्र उपस्थित हैं, जिससे समावेशी शिक्षा की आवश्यकता और अधिक स्पष्ट होती है। अध्ययन के मुख्य चरों के संदर्भ में, शिक्षकों का दृष्टिकोण (3.67), शिक्षक प्रशिक्षण (3.68), संसाधनों की उपलब्धता (3.59), सहायता और समर्थन (3.60) तथा कार्यान्वयन की सफलता (3.70) के माध्य मान अपेक्षाकृत उच्च पाए गए हैं। यह दर्शाता है कि प्रतिभागियों का इन सभी पहलुओं के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है। मानक विचलन के मान मध्यम स्तर के हैं, जो यह संकेत देते हैं कि प्रतिभागियों के उत्तरों में अत्यधिक भिन्नता नहीं है, बल्कि अधिकांश उत्तर माध्य के आसपास केंद्रित हैं। इससे आँकड़ों की स्थिरता और विश्वसनीयता का संकेत मिलता है।

सहसंबंध विश्लेषण

अध्ययन में विभिन्न चरों के मध्य संबंधों की जांच करने के लिए स्पीयरमैन क्रम सहसंबंध गुणांक का उपयोग किया गया। यह विश्लेषण शिक्षकों के दृष्टिकोण, शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता तथा समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन की सफलता के बीच संबंधों को स्पष्ट करता है।

तालिका 4

तालिका 4 शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रशिक्षण एवं कार्यान्वयन की सफलता के मध्य सहसंबंध

		शिक्षकों का दृष्टिकोण	शिक्षक प्रशिक्षण	कार्यान्वयन की सफलता
शिक्षकों का दृष्टिकोण	करेलशन केफीसिएंट	1	.230*	.213*
	सिग्नीफिकेंट (2-टेल्ड)	.	0.021	0.033
शिक्षक प्रशिक्षण	करेलशन केफीसिएंट	.230*	1	.222*
	सिग्नीफिकेंट (2-टेल्ड)	0.021	.	0.026
कार्यान्वयन की सफलता	करेलशन केफीसिएंट	.213*	.222*	1
	सिग्नीफिकेंट (2-टेल्ड)	0.033	0.026	.

*. सहसंबंध 0.05 स्तर पर सार्थक है (2- टेल्ड)।

तालिका 4 में प्रस्तुत सहसंबंध विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण तथा उनका प्रशिक्षण, दोनों ही कार्यान्वयन की सफलता को प्रभावित करते हैं। परिणामों के अनुसार, शिक्षकों का दृष्टिकोण और कार्यान्वयन की सफलता के बीच धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया है ($r = 0.213$, $p < 0.05$)। इसका अर्थ है कि जिन शिक्षकों का दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक होता है, वे इसके क्रियान्वयन में अधिक सफल होते हैं। इसी प्रकार, शिक्षक प्रशिक्षण और कार्यान्वयन की सफलता के बीच भी धनात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध ($r = 0.222$, $p < 0.05$) पाया गया है। यह दर्शाता है कि प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षक समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों का दृष्टिकोण और शिक्षक प्रशिक्षण के बीच भी सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध ($r = 0.230$, $p < 0.05$) पाया गया है, जो यह संकेत करता है कि प्रशिक्षण प्राप्त करने से शिक्षकों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक बनता है। यह परिणाम परिकल्पना का समर्थन करते हैं कि शिक्षकों का दृष्टिकोण और प्रशिक्षण समावेशी शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तालिका 5

तालिका 5 संसाधनों की उपलब्धता एवं कार्यान्वयन की सफलता के मध्य सहसंबंध

		संसाधनों की उपलब्धता	कार्यान्वयन की सफलता
संसाधनों की उपलब्धता	करेलशन केफीसिएंट	1	0.168
	सिग्नीफिकेंट (2-टेल्ड)	.	0.095
कार्यान्वयन की सफलता	करेलशन केफीसिएंट	0.168	1
	सिग्नीफिकेंट (2-टेल्ड)	0.095	.

*. सहसंबंध 0.05 स्तर पर सार्थक है (2- टेल्ड)।

तालिका 5 में प्रस्तुत सहसंबंध विश्लेषण के परिणामों के आधार पर यह पाया गया कि संसाधनों की उपलब्धता और समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन की सफलता के बीच धनात्मक संबंध (r = 0.168) मौजूद है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे संसाधनों की उपलब्धता बढ़ती है, कार्यान्वयन की सफलता में भी वृद्धि की प्रवृत्ति देखी जाती है। हालाँकि, यह संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया ($p = 0.095 > 0.05$)। इसका तात्पर्य यह है कि संसाधनों की उपलब्धता का प्रभाव इस अध्ययन में निर्णायक रूप से सिद्ध नहीं हो पाया है। इसके बावजूद, परिणाम यह संकेत अवश्य देते हैं कि संसाधन समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में सहायक भूमिका निभाते हैं, किन्तु वे अकेले पर्याप्त नहीं हैं। कार्यान्वयन की सफलता पर अन्य कारक जैसे—शिक्षकों का दृष्टिकोण, प्रशिक्षण एवं संस्थागत सहयोग—भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। प्रस्तुत परिकल्पना आंशिक रूप से समर्थित होती है। यद्यपि संसाधनों की कमी एक व्यावहारिक बाधा हो सकती है, परन्तु इस अध्ययन के आंकड़ों के आधार पर इसे एकमात्र या निर्णायक कारक नहीं माना जा सकता।

प्रतिगमन विश्लेषण

अध्ययन में समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन की सफलता को प्रभावित करने वाले कारकों के विश्लेषण के लिए क्रमिक प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग किया गया। इस तकनीक के माध्यम से सहायता एवं समर्थन जैसे स्वतंत्र चर का कार्यान्वयन की सफलता पर प्रभाव ज्ञात किया गया। तालिका 6, 7, 8 एवं 9 में मॉडल उपयुक्तता, अनुकूलता परीक्षण, छद्म निर्धारण गुणांक तथा मानदंड अनुमान से संबंधित परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 6

तालिका 6 क्रमिक प्रतिगमन विश्लेषण का मॉडल उपयुक्तता परीक्षण

मॉडल	-2 लॉग संभाव्यता	काई-वर्ग	स्वतंत्रता की संख्या	सार्थकता स्तर
केवल अवरोध	64.000	—	—	—
अंतिम मॉडल	60.221	3.779	1	0.052

तालिका 6 के अनुसार अंतिम मॉडल, केवल अवरोध मॉडल की तुलना में बेहतर है क्योंकि -2 लॉग संभाव्यता कम हुई है। काई-वर्ग (3.779) का सार्थकता स्तर 0.052 है, जो 0.05 के निकट है। अतः मॉडल सीमांत रूप से उपयुक्त है, लेकिन पूरी तरह मजबूत नहीं माना जा सकता।

तालिका 7

तालिका 7 मॉडल की उपयुक्तता

परीक्षण	काई-वर्ग	स्वतंत्रता की संख्या	सार्थकता स्तर
पियर्सन	47.128	15	0.000
विचलन	29.138	15	0.015

तालिका 7 के अनुसार पियर्सन ($p = 0.000$) और विचलन ($p = 0.015$) दोनों परीक्षण सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं। यह दर्शाता है कि मॉडल डेटा के साथ उपयुक्त रूप से मेल खाता है और विश्लेषण के लिए स्वीकार्य है।

तालिका 8

तालिका 8 छद्म निर्धारण गुणांक

प्रकार	मान
कॉक्स एवं स्नेल	0.037
नागेलकेर्के	0.040
मैकफैडेन	0.015

तालिका 8 के अनुसार छद्म निर्धारण गुणांक के मान बहुत कम (0.015 से 0.040) हैं। यह दर्शाता है कि मॉडल कार्यान्वयन की सफलता में परिवर्तन का केवल छोटा भाग ही स्पष्ट कर पा रहा है, अर्थात अन्य कारकों का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है।

तालिका 9

तालिका 9 मानदंड अनुमान

घटक	अनुमान मान	मानक त्रुटि	वाल्ड	स्वतंत्रता की संख्या	सार्थकता स्तर	न्यूनतम सीमा	अधिकतम सीमा
[स्तर = 1]	-2.319	1.003	5.349	1	0.021	-4.285	-0.354

[स्तर = 2]	-0.696	0.798	0.761	1	0.383	-2.261	0.868
[स्तर = 3]	1.149	0.783	2.156	1	0.142	-0.385	2.684
[स्तर = 4]	3.124	0.838	13.901	1	0.000	1.482	4.766
सहायता एवं समर्थन (SS)	0.453	0.213	4.543	1	0.033	0.036	0.870

प्रस्तुत क्रमिक प्रतिगमन विश्लेषण के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन में शिक्षकों को मिलने वाली सहायता एवं समर्थन एक महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका निभाते हैं। तालिका 9 के अनुसार, सहायता एवं समर्थन का अनुमान मान 0.453 है, जो यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे शिक्षकों को अधिक सहयोग और समर्थन प्राप्त होता है, कार्यान्वयन की सफलता में वृद्धि होती है। इसका सार्थकता स्तर ($p = 0.033$) 0.05 से कम है, जिससे यह सिद्ध होता है कि यह संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। साथ ही, विश्वास अंतराल (0.036 से 0.870) शून्य को शामिल नहीं करता, जो इस परिणाम की विश्वसनीयता को और मजबूत करता है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षकों को प्राप्त होने वाला सहयोग एवं समर्थन उनकी कार्यप्रणाली को सुदृढ़ बनाता है तथा समावेशी शिक्षा के सफल क्रियान्वयन एवं छात्रों के बेहतर शैक्षिक परिणामों में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

गुणात्मक विश्लेषण

अध्ययन में समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन से संबंधित गहन समझ प्राप्त करने के लिए गुणात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया। इस विश्लेषण के अंतर्गत शिक्षकों के साक्षात्कारों के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का विषयगत विश्लेषण किया गया, जिससे उनके अनुभवों, चुनौतियों, रणनीतियों तथा दृष्टिकोण को समझा जा सके। तालिका 10 में विभिन्न प्रमुख थीम, उप-थीम तथा उनके मुख्य निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं, जो समावेशी शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट करते हैं।

तालिका 10

तालिका 10 समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन पर शिक्षकों के साक्षात्कार डेटा का विषयगत विश्लेषण

क्रमांक	थीम	उप-थीम / कोड	मुख्य निष्कर्ष
1	समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण	सकारात्मक दृष्टिकोण, व्यावहारिक कठिनाइयाँ	सभी शिक्षक समावेशी शिक्षा को आवश्यक मानते हैं, लेकिन कुछ को इसके क्रियान्वयन में कठिनाई होती है
2	प्रशिक्षण एवं पेशेवर विकास	प्रशिक्षण प्राप्त, प्रशिक्षण का अभाव	प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी और सक्षम हैं
3	शिक्षण अनुभव	सकारात्मक, चुनौतीपूर्ण, मिश्रित अनुभव	अनुभव मिश्रित है—कुछ के लिए प्रेरणादायक, कुछ के लिए चुनौतीपूर्ण
4	संसाधनों की उपलब्धता	पर्याप्त संसाधन, संसाधनों की कमी	अधिकतर विद्यालयों में संसाधनों की कमी पाई गई
5	मुख्य चुनौतियाँ	समय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन, विशेष आवश्यकताओं की समझ	शिक्षकों को समय, ध्यान और व्यवहार नियंत्रण में कठिनाई होती है
6	शिक्षण रणनीतियाँ	विभेदित शिक्षण, आईसीटी, आईईपी, पीर लर्निंग गतिविधि आधारित शिक्षण	शिक्षक विभिन्न नवाचारी पद्धतियों का उपयोग करते हैं
7	प्रशासन एवं सहयोग	पूर्ण सहयोग, सीमित सहयोग	सहयोग आंशिक है, इसे और मजबूत करने की आवश्यकता है
8	छात्रों पर प्रभाव	सामाजिक विकास, शैक्षणिक विकास, आत्मविश्वास	समावेशी शिक्षा छात्रों के समग्र विकास में सहायक है

प्रस्तुत तालिका 10 के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में विभिन्न महत्वपूर्ण कारक प्रभाव डालते हैं। शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सामान्यतः सकारात्मक पाया गया, जिससे यह सिद्ध होता है कि वे इसे आवश्यक मानते हैं, किन्तु व्यावहारिक स्तर पर उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। प्रशिक्षण एवं पेशेवर विकास के संदर्भ में यह पाया गया कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी और सक्षम होते हैं, जो यह दर्शाता है कि प्रशिक्षण कार्यान्वयन की सफलता को प्रभावित करता है। शिक्षण अनुभव मिश्रित पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि कुछ शिक्षकों के लिए यह प्रक्रिया प्रेरणादायक है, जबकि अन्य के लिए चुनौतीपूर्ण है। संसाधनों की उपलब्धता के संदर्भ में अधिकांश विद्यालयों में कमी पाई गई, जो यह दर्शाता है कि संसाधनों का अभाव समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में एक प्रमुख बाधा है। मुख्य चुनौतियों में समय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन तथा विशेष आवश्यकताओं की समझ का अभाव प्रमुख रूप से सामने आया। इसके बावजूद, शिक्षक विभेदित शिक्षण, सहपाठी अधिगम, व्यक्तिगत शिक्षण योजना तथा गतिविधि आधारित शिक्षण जैसी विभिन्न

नवाचारी रणनीतियों का उपयोग कर रहे हैं। प्रशासनिक सहयोग आंशिक रूप से उपलब्ध पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सहायता एवं समर्थन को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। अंततः, यह भी पाया गया कि समावेशी शिक्षा का छात्रों के सामाजिक, शैक्षणिक एवं आत्मविश्वास विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः तालिका 10 का विश्लेषण यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि शिक्षकों का दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता तथा संस्थागत सहयोग—ये सभी कारक मिलकर समावेशी शिक्षा के सफल कार्यान्वयन को निर्धारित करते हैं।

निष्कर्षों पर चर्चा

इस अध्ययन के निष्कर्ष समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन को समझने में महत्वपूर्ण अनुभवजन्य साक्ष्य प्रदान करते हैं। परिणामों से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि समावेशी शिक्षा की सफलता किसी एक कारक पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता तथा संस्थागत सहयोग जैसे बहुआयामी कारकों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है। अध्ययन में एक सुसंगत प्रवृत्ति देखी गई कि जहाँ इन कारकों की गुणवत्ता एवं उपलब्धता बेहतर होती है, वहाँ समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन अधिक सफल और प्रभावी होता है।

जनसांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि अध्ययन में मध्यम आयु वर्ग एवं अपेक्षाकृत कम अनुभव वाले शिक्षकों की भागीदारी अधिक रही। यह संकेत देता है कि समकालीन शैक्षिक दृष्टिकोणों के प्रति उनकी ग्रहणशीलता अधिक हो सकती है। साथ ही, अधिकांश प्रतिभागियों का उच्च शैक्षणिक स्तर इस तथ्य को बल देता है कि वे समावेशी शिक्षा की अवधारणा को समझने और लागू करने में सक्षम हैं। तथापि, समावेशी शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण की कमी (57% प्रतिभागियों द्वारा प्रशिक्षण न प्राप्त करना) एक महत्वपूर्ण अंतराल को उजागर करती है, जो क्रियान्वयन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

वर्णनात्मक सांख्यिकी के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों का दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता, सहायता एवं समर्थन तथा कार्यान्वयन की सफलता—सभी के माध्य मान अपेक्षाकृत उच्च हैं। यह इस तथ्य की पुष्टि करता है कि शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यमान है। हालांकि, मध्यम स्तर का मानक विचलन यह संकेत करता है कि इन पहलुओं के अनुभव और धारणा में कुछ भिन्नताएँ भी मौजूद हैं, जो विभिन्न संस्थागत एवं सामाजिक संदर्भों के कारण उत्पन्न हो सकती हैं।

सहसंबंध विश्लेषण अध्ययन के सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्षों में से एक प्रस्तुत करता है। शिक्षकों का दृष्टिकोण और कार्यान्वयन की सफलता के बीच सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध यह दर्शाता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा की सफलता का एक प्रमुख निर्धारक है। इसी प्रकार, शिक्षक प्रशिक्षण और कार्यान्वयन की सफलता के मध्य पाया गया महत्वपूर्ण संबंध इस तथ्य को पुष्ट करता है कि प्रशिक्षण शिक्षकों की दक्षता, आत्मविश्वास तथा व्यवहारिक कौशल को सुदृढ़ करता है। साथ ही, दृष्टिकोण और प्रशिक्षण के मध्य सकारात्मक संबंध यह इंगित करता है कि प्रशिक्षण केवल कौशल विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षकों की सोच और दृष्टिकोण को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

दूसरी ओर, संसाधनों की उपलब्धता और कार्यान्वयन की सफलता के मध्य यद्यपि सकारात्मक संबंध पाया गया, परंतु यह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं था। यह परिणाम एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि केवल संसाधनों की उपलब्धता ही सफलता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह निष्कर्ष इस धारणा को मजबूत करता है कि मानवीय एवं संस्थागत कारक—जैसे शिक्षक का दृष्टिकोण, प्रशिक्षण और सहयोग—अधिक निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

प्रतिगमन विश्लेषण के परिणाम इस अध्ययन को और अधिक सुदृढ़ करते हैं। सहायता एवं समर्थन को कार्यान्वयन की सफलता का एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता पाया गया, जिसका प्रभाव सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। यह दर्शाता है कि जब शिक्षकों को प्रशासनिक, सहकर्मी एवं संस्थागत स्तर पर पर्याप्त सहयोग प्राप्त होता है, तो वे समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी ढंग से लागू कर पाते हैं। यद्यपि मॉडल द्वारा व्याख्यायित परिवर्तन का अनुपात अपेक्षाकृत कम है, फिर भी यह संकेत करता है कि समावेशी शिक्षा की सफलता एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें अनेक अन्य कारकों का भी योगदान होता है।

गुणात्मक विश्लेषण ने इन मात्रात्मक निष्कर्षों को गहराई प्रदान की है। शिक्षकों के साक्षात्कारों से यह स्पष्ट हुआ कि वे समावेशी शिक्षा को आवश्यक मानते हैं, किंतु व्यवहारिक स्तर पर उन्हें समय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन तथा विशेष आवश्यकताओं की समझ जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी और सक्षम पाए गए, जो मात्रात्मक परिणामों के अनुरूप है। संसाधनों की कमी, सीमित प्रशासनिक सहयोग तथा विविध कक्षा आवश्यकताओं ने कार्यान्वयन को जटिल बनाया है, फिर भी शिक्षक विभेदित शिक्षण, सहपाठी अधिगम एवं आईसीटी आधारित नवाचारों के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास कर रहे हैं।

समग्र रूप से, यह अध्ययन पारंपरिक शैक्षिक दृष्टिकोणों और समावेशी शिक्षा के व्यावहारिक क्रियान्वयन के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है। निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि समावेशी शिक्षा को सफल बनाने के लिए केवल नीतिगत प्रावधान पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि इसके लिए शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण, सतत प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधन तथा मजबूत संस्थागत सहयोग अनिवार्य हैं। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शैक्षिक प्रशासकों एवं शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करता है, जो समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक एवं सतत बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष और सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्यधारा कक्षाओं में समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका का विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि समावेशी शिक्षा की सफलता शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रशिक्षण, संसाधनों और संस्थागत सहयोग के संयुक्त प्रभाव पर निर्भर करती है। शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण और प्रशिक्षण इसके प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि सहायता एवं समर्थन एक महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक है, जबकि संसाधन सहायक भूमिका निभाते हैं। शिक्षक विभिन्न रणनीतियों के माध्यम से चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास करते हैं।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा का प्रभावी क्रियान्वयन एक समग्र प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। यदि उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधन तथा मजबूत संस्थागत समर्थन प्राप्त हो, तो समावेशी शिक्षा को सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है, जिससे सभी शिक्षार्थियों के लिए समान, न्यायसंगत एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

- **शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सुदृढ़ीकरण:** समावेशी शिक्षा से संबंधित प्री-सर्विस एवं इन-सर्विस प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अनिवार्य एवं व्यावहारिक बनाया जाए, जिससे शिक्षक विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को समझ सकें।
- **सतत व्यावसायिक विकास:** शिक्षकों के लिए नियमित कार्यशालाएँ, सेमिनार एवं कौशल उन्नयन कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, ताकि वे नवीन शिक्षण रणनीतियों से अवगत रह सकें।
- **संस्थागत सहयोग को सुदृढ़ करना:** विद्यालय प्रशासन, विशेष शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं के बीच समन्वय बढ़ाया जाए, जिससे शिक्षकों को आवश्यक सहायता एवं मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।
- **संसाधनों की उपलब्धता में सुधार:** विद्यालयों में सहायक उपकरण, अनुकूलित पाठ्य सामग्री तथा ICT आधारित संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, जिससे समावेशी कक्षा वातावरण को सुदृढ़ किया जा सके।
- **विभेदित एवं समावेशी शिक्षण रणनीतियों को बढ़ावा देना:** डिफ्रेंटिएटेड इंस्ट्रक्शन, यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (UDL) तथा सहयोगात्मक अधिगम जैसी रणनीतियों को कक्षा शिक्षण का अभिन्न अंग बनाया जाए।
- **छात्र-शिक्षक अनुपात में सुधार:** कक्षाओं में छात्रों की संख्या को संतुलित किया जाए, ताकि शिक्षक प्रत्येक छात्र पर पर्याप्त ध्यान दे सकें।
- **नीतिगत स्तर पर प्रभावी क्रियान्वयन:** शिक्षा नीतियों में समावेशी शिक्षा के प्रावधानों को केवल सिद्धांत तक सीमित न रखकर उनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु स्पष्ट दिशानिर्देश एवं निगरानी तंत्र विकसित किया जाए।
- **अभिभावक एवं समुदाय की भागीदारी:** समावेशी शिक्षा को सफल बनाने के लिए अभिभावकों एवं समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
- **तकनीकी एकीकरण:** डिजिटल उपकरणों एवं सहायक प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ाकर समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं सुलभ बनाया जाए।

संदर्भ

Aftab, D. M. J., Amjad, F., and Chaudhry, H. (2024). Inclusive Education Strategies for Successful Inclusion of Students with Disabilities in Mainstream Classrooms (मुख्यधारा की कक्षाओं में दिव्यांग विद्यार्थियों के सफल समावेशन के लिए समावेशी शिक्षा रणनीतियाँ). Academy of Education and Social Sciences Review, 4(3), 439–453. https://doi.org/10.48112/aessr.v4i3.824

Antia, S. (1999). The Roles of Special Educators and Classroom Teachers in an Inclusive School (समावेशी विद्यालय में विशेष शिक्षकों और कक्षा शिक्षकों की भूमिकाएँ). Journal of Deaf Studies and Deaf Education, 4(3), 203–214. https://doi.org/10.1093/deafed/4.3.203

Dignath, C., Rimm-Kaufman, S., van Ewijk, R., and Kunter, M. (2022). Teachers' Beliefs About Inclusive Education and Insights on What Contributes to Those Beliefs: A Meta-Analytical Study (समावेशी शिक्षा के बारे में शिक्षकों की मान्यताएँ और उन मान्यताओं में योगदान देने वाले कारकों पर अंतर्दृष्टि: एक मेटा-विश्लेषणात्मक अध्ययन). Educational Psychology Review, 34(4), 2609–2660. https://doi.org/10.1007/s10648-022-09695-0

Fairbrother, M., Specht, J., Delory, J., Whitley, J., Ismailos, L., and Vilela, M. (2025). Integrating Practice and Theory in Teacher Education: Enhancing Pre-Service Self-Efficacy for Inclusive Education (शिक्षक शिक्षा में अभ्यास और सिद्धांत का एकीकरण: समावेशी शिक्षा के लिए सेवा-पूर्व आत्म-प्रभावकारिता को बढ़ाना). Education Sciences, 15(4), 497. https://doi.org/10.3390/educsci15040497

Gaal, C., Ryder, C. H., Amsalem, S. R., and Aon, O. (2025). Shaping Inclusive Classrooms: Key Factors Influencing Teachers' Attitudes Toward Inclusion of Students with Special Needs (समावेशी कक्षाओं को आकार देना: विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के समावेशन के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक). Education Sciences, 15(5), 541. https://doi.org/10.3390/educsci15050541

Holz, T., and Lessing, A. (2002). Reflections on Attention-Deficit Hyperactivity Disorder (ADHD) in an Inclusive Education System: Research Paper (समावेशी शिक्षा प्रणाली में अटेंशन-डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD) पर चिंतन: शोध पत्र). Sabinet Africana, 20(3).

Kenny, N., McCoy, S., and O'Higgins Norman, J. (2023). A Whole Education Approach to Inclusive Education: An Integrated Model to Guide Planning, Policy, and Provision (समावेशी शिक्षा के लिए संपूर्ण शिक्षा दृष्टिकोण: योजना, नीति और प्रावधान का मार्गदर्शन करने वाला एक एकीकृत मॉडल). Education Sciences, 13(9), 959. https://doi.org/10.3390/educsci13090959

Knight, C., Clegg, Z., Conn, C., Hutt, M., and Crick, T. (2022). Aspiring to Include Versus Implicit 'Othering': Teachers' Perceptions of Inclusive Education in Wales (समावेशन की आकांक्षा बनाम अंतर्निहित 'अन्यीकरण': वेल्स में समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की धारणाएँ). British Journal of Special Education, 49(1), 6–23. https://doi.org/10.1111/1467-8578.12394

Kumar, S. B., and Sudam, K. S. (2025). Principals and Teachers in Creating Inclusive Schools and Implementing Inclusive Activities: An Analytical Study (समावेशी विद्यालय के सृजन व समावेशी क्रिया-कलापों के क्रियान्वयन में प्रधानाचार्य एवं शिक्षक: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन). International Journal for Multidisciplinary Research, 7(5), 1–7. https://doi.org/10.36948/ijfmr.2025.v07i05.58200

Long, Y., Sharma, U., and Subban, P. (2025). Teachers' Attitudes and Self-Efficacy Toward Inclusive Education in Mainland China: A Meta-Analysis (मुख्यभूमि चीन में समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण और आत्म-प्रभावकारिता: एक मेटा-विश्लेषण). Cogent Education, 12(1). https://doi.org/10.1080/2331186X.2025.2526872

Mahananda, H. (2025). The Prime Classroom Model: A Practical Framework for Purposeful Teaching (प्राइम कक्षा मॉडल: उद्देश्यपूर्ण शिक्षण के लिए एक व्यावहारिक रूपरेखा). International Journal of Social Science Research, 2(6), 520–539. https://doi.org/10.70558/IJSSR.2025.v2.i6.30758

Ninad, K. V., Ugandhra, G. P., Hemanth, K. P., Seema, J. A., and Sujatha, A. (2023). Improvement and Implementation of Contemporary Education Systems (समकालीन शिक्षा प्रणालियों का सुधार और क्रियान्वयन). Journal of Engineering Education Transformations, 37(S1), 26–31. https://doi.org/10.16920/jeet/2023/v37is1/23165

Priyadarshini, V., and Sahaya Mary, R. (2024). Universal Design for Learning (UDL) in Inclusive Education: Accelerating Learning for All (समावेशी शिक्षा में यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (UDL): सभी के लिए सीखने की प्रक्रिया को तेज करना). Shanlax International Journal of Arts, Science and Humanities, 11(4), 145–150. https://doi.org/10.34293/sijash.v11i4.7489

Saez-Gonzalez, P., De la Fuente-González, S., Sierra-Díaz, J., and Uría-Valle, P. (2025). Inclusive Education and Physical Education in Spain: A Qualitative Analysis of Teachers' Perceptions (स्पेन में समावेशी शिक्षा और शारीरिक शिक्षा: शिक्षकों की धारणाओं का गुणात्मक विश्लेषण). Education Sciences, 15(1), 108. https://doi.org/10.3390/educsci15010108

Sepadi, M. D. (2025). Teachers' Understanding of Implementing Inclusion in Mainstream Classrooms in Rural Areas (ग्रामीण क्षेत्रों की मुख्यधारा कक्षाओं में समावेशन लागू करने के संबंध में शिक्षकों की समझ). Education Sciences, 15(7), 889. https://doi.org/10.3390/educsci15070889

Shevchenko, Y. M., Dubiah, S. M., Melash, V. D., Fefilova, T. V., and Saenko, Y. O. (2020). The Role of Teachers in the Organization of Inclusive Education of Primary School Pupils (प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की समावेशी शिक्षा के संगठन में शिक्षकों की भूमिका). International Journal of Higher Education, 9(7), 207. https://doi.org/10.5430/ijhe.v9n7p207

Sirem, O., and Chatal, T. (2023). An Analysis of Classroom Teachers' Awareness of Inclusive Education (समावेशी शिक्षा के प्रति कक्षा शिक्षकों की जागरूकता का विश्लेषण). European Journal of Special Needs Education, 38(2), 203–217. https://doi.org/10.1080/08856257.2022.2050971

Tripathi, T. (2025). Understanding Teacher Agency in Implementing Inclusive Education Policy: A Mixed-Methods Study of Private Schools under India's Right to Education Act (समावेशी शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में शिक्षक एजेंसी को समझना: भारत के शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत निजी विद्यालयों का मिश्रित-पद्धति अध्ययन). Frontiers in Education, 10, Article 1678998. https://doi.org/10.3389/feduc.2025.1678998

United Nations. (1994). The Salamanca Statement and Framework for Action on Special Needs Education (विशेष आवश्यकता शिक्षा पर सलामांका वक्तव्य और कार्यवाही की रूपरेखा).

White, R., and Fletcher, G. (2026). Navigating Inclusive Education in Mainstream Primary Schools: A Phenomenological Study of Teachers' Perceptions and Experiences (मुख्यधारा के प्राथमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा का संचालन: शिक्षकों की धारणाओं और अनुभवों का एक घटनात्मक अध्ययन). International Journal of Inclusive Education, 30(3), 456–484. https://doi.org/10.1080/13603116.2025.2459719

Woodcock, S., and Anderson, J. (2025). Concepts to Classrooms: The Influence of Teacher Knowledge on Inclusive Classroom Practice (अवधारणाओं से कक्षाओं तक: समावेशी कक्षा अभ्यास पर शिक्षक ज्ञान का प्रभाव). International Journal of Educational Research Open, 8, 100412. https://doi.org/10.1016/j.ijedro.2024.100412